५. ठुकरा दो या प्यार करो

I. प्रश्न उत्तर

प्र.१. भगवान के उपासक पूजा करने किस - किस ढंग से आते हैं ?

उ. भगवान के उपासक पूजा करने कई ढंग से आते हैं कुछ उपासक कई ढंग की अतिमूल्यवान वस्तुएँ लाकर चढ़ाते हैं । कुछ उपासक धूम - धाम से आडम्बरपूर्वक मंदिर में आते हैं । कुछ भक्त मोती और मणियो जैसी बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर अर्पित करते हैं ।

प्र.२. कवयित्री भगवान के चरणों में अर्पित करने के लिए क्या लायी हैं ?

उ. कवयित्री एक दीन स्त्री हैं । वह भगवान के चरणों में अर्पित करने के लिये भौतिक वस्तुएँ जैसे रत्न, आभूषण, धूप - दीप, नैवेद्य, श्रृंगार की सामग्री, फूलों का हार आदि कुछ भी नहीं लाई हैं । वह खाली हाथ मंदिर में आयी हैं । वह अपना सर्वस्व याने तन, मन और भक्ति एवं श्रध्दा भरा हुआ हृदय भगवान के चरणों में अर्पित करने के लिए आयी हैं ।

प्र.३. ''ठुकरा दो या प्यार करो'' कविता का सारांश लिखिए ।

उ. ''ठुकरा दो या प्यार करो'' नामक कविता की कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान हैं । वे हिन्दी की राष्ट्रीय -धारा की कवयित्री तथा कहानीकार एवं लेखिका हैं । उनका जन्म १९०४ में हुआ और मृत्यु १९४८ में हुई । उनकी कविताओं का संग्रह 'मुकुल' है और कुछ कविताएँ'त्रिधारा' में संग्रहित हैं । उन्होंने भारत के स्वतंत्रता - आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था ।

कविता का सारांश इस प्रकार है -

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस कविता में यह दिखाया है कि भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती हैं, ठाट - बाट और आडंबरों से नहीं ।कवयित्री भगवान के मन्दिर में जाकर इस प्रकार निवेदन करती है - '' हे भगवान! तुम्हारे दर्शन के लिए भक्त आते हैं । वे उपहार के रुप में मूल्यवान चीजें लाते हैं और तुम्हें चढ़ाते हैं । मैं एक गरीब औरत हूँ । इसलिए कुछ भी साथ नहीं लायी । फिर भी साहस कर मन्दिर में पूजा करने के लिए आई । मैं धूप - दीप, नैवेद्य, और पूजा की सामग्री नहीं लायी । तुम्हारे गले में पहनाने को फूलों का हार भी नहीं लायी । स्तुति करने के लिए मेरे स्वर में माधुर्य नहीं है । मन कीभावना व्यक्त करने के लिए चतुराई नहीं हैं । मैं दान या दक्षिणा भी नहीं लायी । मैं खाली हाथों से मन्दिर में चली आयी । पूजा और पूजा की सामग्री इसी पूजारिन को ही मान लीजिए । दान और दक्षिणा इसी भिखारिन को ही मान लीजिए । तुम्हारे प्रेम की लोभी बनकर मैं अपना हृदय दिखाने आयी हूँ । मेरे पास जो कुछ है, वह

यही है । यह हृदय तुम्हारा ही हैं । तुम चाहो तो स्वीकार करों नहीं तो ठुकरा दो ।

<u>कविता की विशेषता : -</u>

भगवान के प्रति कवयित्री के मन में जो गहरा प्रेम हैं वह इस कविता में दिखाई देता हैं । आत्म समर्पण की भावना व्यक्त करने में भी कवयित्री सफल हुई हैं ।

I. लिंग ब्दलिए ।

१.	कवयित्री	-	कवि	३.	उपासिका	-	उपासक
२.	गरीबिनी	-	गरीब	४.	देव	-	देवी

II. क्रम में लिखिए ।

१. कविता उनकी तथा देश प्रेम भक्ति विषय के मुख्य है ।

उ. देश प्रेम तथा भक्ति उनकी कविता केमुख्य विषय है ।

२. मैं आयी हूँ । हाथ खाली मंदिर में चली ।

उ. मैं मंदिर में खाली हाथ आयी हूँ ।

३. हृदय प्रेम से भरा मेरा है ।

उ. मेरा हृदय प्रेम से भरा है ।

III. विलोम शब्द लिखिए ।

१.	आडंबर	X	निराडंबर	४.	देव	X	दानव
२.	फूल	X	काँटा	५.	खाली	X	भरा
३.	चतुरता	X	मूर्खता				

IV. प्रत्यय अलग कीजिए ।

१.	चतुरता	-	ता	३.	गरीबिनी	-	इनी
२.	साहसी	-	ई	४.	संग्रहित	-	इत

V. वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

१. "ठुकरा दो या प्यार करो" नामक कविता की कवयित्री कौन है ?

उ. श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

२. सुभद्रा कुमारी चौहान जी की कविताओं का मुख्य विषय क्या है ?

उ. देश प्रेम तथा भक्ति

३. सुभद्रा कुमारी चौहान जी का जन्म कब हुआ ?

उ. १९०४ ई. में ।

४. सुभद्रा कुमारी चौहान जी की कविताओं का संग्रह किसमें है ?

उ. मुकुल

५. सुभद्रा कुमारी चौहान किस धारा की कवि है ?

उ. राष्ट्रीय

६. सुभद्रा कुमारी चौहान भारत के किस आंदोलन में भाग लिया ?

उ. स्वतंत्रता आंदोलन में ।

७. ईश्वर की भक्ति कैसे करनी चाहिए ?

उ. सच्चे मन से ।

८. कुछ उपासक भगवान के पास कैसे आते हैं ?

उ. ठाठ - बाट से ।

९. कवयित्री मंदिर में कैसे चली आती है ?

उ. खाली हाथ

१०. कवयित्री कैसी है ?

उ. गरीब

११. कवयित्री के पास स्तुति करने के लिए क्या नहीं है ?

उ. माधुर्य

१२. मन का भाव प्रकट करने के लिए क्या नहीं हैं?

उ. चतुरता / चातुर्य

१३. कवयित्री अंत में भगवान को क्या चढ़ाती है ?

उ. भक्ति से भरा मन ।

१४. हृदय /मन किसका दिया हुआ है ?

उ. ईश्वर

१५. सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु कब हुई ?

उ. १९४८ में ।

***